B.A. History, Hons, Part: I

Paper: I, Unit: V, Date: Lecture No. 13 10.8.2020

पाठ: प्रबोधन काल

16वीं सदी से लेकर 18वीं सदी के अन्त तक दीर्घावधि आधुनिक यूरोप का संरचना काल थी, जब कई परस्पर सम्बन्ध ऐतिहासिक परिघटनाएँ एक साथ परिघटित हुई, जिनमें राष्ट्रीय राज्यों के उदय, पुनर्जागरण धर्मसुधार आन्दोलन, वाणिज्यवाद और प्रबोधन को परिगणित किया जाता है। इनमें किसी को भी एक दूसरे से विलगाया नहीं जा सकता परन्तु प्रत्येक की अपनी-अपनी अलग-अलग भूमिका एवं महत्व है। प्रबोधन का इनमें विशेष महत्व इसलिए है कि इसने बुद्धिसंगत आधार पर ज्ञान के क्षितिज का विस्तार किया और अपने हर समकालीन परिघटनाओं को अनुभवजन्य, तार्किक, बौद्धिक, वैज्ञानिक तथा वैज्ञानिक आधार दिया। कुल मिलाकर प्रबोधन ने यूरोप को प्रबुद्ध बनाकर राष्ट्रवाद, पूँजीवाद, लोकतंत्रवाद और अन्ततः मानवतावाद एवं समाजवाद का पथ प्रशस्त किया। निस्संदेह इस कालखंड में ज्ञान के प्रायः सभी क्षेत्र में ऐसी ज्योति जली, जिससे सारा यूरोप प्रकाशित हुआ, जिसके मूल स्रोत बुद्धि, विवेक, अनुभव तथा तर्क थे। इसे ज्ञानोदय काल भी कहा जाता है, जिस अवधि में पश्चिम यूरोप के बुद्धिजीवियों ने परम्परावादी ज्ञान की लीक से हटकर विश्लेषण और आलोचना को अपने अध्ययन एवं अन्वेषण का आधार बनाया।

प्रबोधन काल विज्ञान की प्रगति से गहरे तौर पर जुड़ा था। मांटेस्क्यू, वाल्टेयर, रूसो, बेकन, देस्कार्ते, बेकारिया, स्पीनोजा, दीदारो, कांट, ह्यूम, एडम स्मिथ आदि महान दार्शनिकों ने प्रबोधन को उत्प्रेरित कर अमेरिकी स्वातंत्र्य संग्राम और फ्रान्सीसी राज्यक्रांति को ही संभव नहीं बनाया बल्कि आधुनिक दर्शन के धरातल को प्रशस्त किया। अमेरिकी स्वातंत्र्य संग्राम के अगुआ बेन्जामिन फ्रैंकलीन, थामस जेफरसन तथा जेम्स मैडीसन यूरोपीय प्रबोधन से प्रभावित ही नहीं थे, अपितु कई प्रबुद्ध दार्शनिकों के सम्पर्क में भी थे। फ्रान्सीसी राज्यक्रान्ति को तो मांटेस्क्यू, वाल्टेयर, रूसो, दीदारो और एडम स्मिथ द्वारा पैदा किए गए बौद्धिक जागरण का ही परिणाम माना जाता है। देस्कार्ते के बुद्धिवादी दर्शन ने प्रबोधन की आधारशिला रखी। उसने संदेह की पद्धति का ईजाद किया, जिसने दर्शन के क्षेत्र में मस्तिष्क और पदार्थ के द्वैध सिद्धांत को जन्म दिया। उसका मानना था कि किसी भी परिघटना अथवा विषय का अध्ययन संदेह से प्रारंभ करना चाहिए और वह हर चीज असत्य है जिसे प्रमाणों के द्वारा सिद्ध न किया जा सके। देस्कार्ते की पद्धति का अनुगमन जॉन लॉक और डेविड ह्यूम ने किया, किंतु स्पीनोजा ने अपनी पुस्तकों टैक्टाटस और एथिक्स में और डेविड ह्यूम ने किया, किंतु स्पीनोजा ने अपनी पुस्तकों टैक्टाटस और एथिक्स में चुनौती दी। इस प्रकार दर्शन के क्षेत्र में दो धाराएँ विकसित हुई – देस्कार्ते, लॉक और क्रिश्चियन वोल्फ की मध्यम मार्गी धारा और स्पीनोजा की आमूल परिवर्तनवादी धारा।

मध्यम मार्गी धारा ने शक्ति और विश्वास के परम्परावादी एवं सुधारवादी धाराओं के समायोजन की वकालत की तो आमूल परिवर्तनवादी धारा के प्रवर्तक स्पीनोजा ने प्रजातंत्र, व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं अभिव्यक्ति की अनादी और धार्मिक प्राधिकार के अन्त की माँग की। मांटेस्क्यू ने शक्ति पार्थक्य के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, जिसका आज भी लोकतांत्रिक देशों में अनुसरण किया जाता है। रूसो ने अपने 'समझौता के सिद्धांत' के आधार पर प्रत्यक्ष लोकतंत्र का आवाहन किया। वाल्टेयर ने राज्य पर चर्च के प्रभाव को समाप्त करने की अपील की। दीदारो ने विश्वकोष के प्रकाशन के द्वारा ज्ञान के क्षितिज को असीमित विस्तार दिया। इमानुएल कांट ने बुद्धिवाद और धार्मिक विश्वास के बीच, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और राजनीतिक शक्ति के बीच तथा निजी और सार्वजनिक क्षेत्र के बीच समन्वय स्थापित किया, जिसका प्रभाव जर्मनी में 20वीं सदी तक बना रहा। इंग्लैंड की मेरी वोल्स्टोनक्राफ्ट सर्वाधिक नारीवादियों में प्रमुख थी, जिसने स्त्री और पुरुष को

समान मानने की वकालत की। गिब्बन ने आलोचनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में कारणत्व के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

प्रबोधनकालीन विचारों को विज्ञान की प्रगति ने गहरे तौर पर प्रभावित किया। जेम्सवाट ने 1776 में वाष्प इंजन का आविष्कार किया, जिसने औद्योगिक क्रान्ति को संभव बनाया। जोसेफ प्रीस्ले ने कार्बन डाइऑक्साइड का पता लगाया। लैवोजियर के प्रयोगों के आधार पर पेरिस में पहले रासायनिक कारखाना की स्थापना हुई। मौन्टगोल्फियर बन्धुओं के प्रयोगों से 1783 में गर्म हवा के बैलून के सहारे मनुष्य का पहला हवाई सफर संभव हुआ। प्रबुद्ध विज्ञानवाद ने प्रयोग और बुद्धिवादी दर्शन की महत्ता को स्थापित किया। वस्तुतः विज्ञान और दर्शन के संयोग ने उन्नति तथा प्रगति के शाश्वत सिद्धांत का प्रतिपादन किया। वैज्ञानिक अध्ययन को इस काल में प्राकृतिक दर्शन कहा गया, जिसके अन्तर्गत भौतिकी, रसायन, भूगर्भशास्त्र, वनस्पति विज्ञान, जीव विज्ञान, शरीर विज्ञान का यथेष्ट विकास हुआ।

प्रबोधन काल में वैज्ञानिक अनुसंधान को उत्प्रेरित करने के लिए वैज्ञानिक समितियों तथा अकादमियों की स्थापना की गई और वेधशालाओं का निर्माण किया गया। वैज्ञानिकों ने अनेक सिद्धान्तों, सामान्यीकरणों, नियमों तथा नियतियों का निर्धारण किया। गणित, भौतिकी, चिकित्साशास्त्र, जनमिति, रसायनशास्त्र आदि के क्षेत्र में नए अनुसंधानों ने वैज्ञानिक क्रान्ति को जन्म दिया।

प्रबोधन ने आधुनिक राजनीतिक एवं बौद्धिक संस्कृति को जन्म दिया। पूँजीवादी एवं उदारवादी लोकतंत्र और लोक कल्याणकारी राज्य, नागरिकों के मौलिक अधिकार और स्वतंत्रता, समानता एवं बन्धुत्वभाव, स्वशासन, बाजार संरचना, पूँजीवाद, राज्य संरचना, नागरिक समाज आदि की अवधारणाएँ प्रबोधनकालीन अध्ययन के परिणामस्वरूप ही आधुनिक काल में विकसित हो सकीं। आधुनिक विधि एवं समाजशास्त्र को भी प्रबोधन का परिणाम ही माना जा सकता है। आधुनिक आर्थिक सिद्धान्तों, नियमों तथा व्यवहारों का आधार भी प्रबुद्ध चिन्तन ही था।

जाहिर है कि यूरोपीय प्रबोधन ने बौद्धिक क्षितिज का विस्तार कर यूरोप ही नहीं, पूरी दुनियाँ का कायाकल्प कर दिया। वस्तुतः यह एक बौद्धिक क्रान्ति थी, जिसने आधुनिकीकरण का मार्ग दर्शन ही नहीं, अपितु उसकी प्रक्रिया का हिस्सा बन आधुनिक युग के निर्माण में महत्त योगदान दिया।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जमनगर